International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2016; Page No. 71-73

साहित्य में जीवन मूल्य

[1] कु0 चारू यादव, [2] डा0 रामअवध षस्त्री

[1] शोध छात्रा, जे0 एस0 हिंन्दू कालिज, अमरोहा, उत्तर प्रदेश, भारत।
[2] निर्देशक हिंदी विभगाध्यक्ष,जे0एस0 हिंन्दू कालिज, अमरोहा, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

साहित्य में निहित जीवन–मूल्यों से समाज को व्यापक रूप से प्रेरणा मिलती है, इसमें कोई संदेह नहीं है। साहित्य ही वह भावभूमि है; जिससे मनुश्य अपने जीवन में उचित मूल्यों को स्थापित करके अपना जीवन सार्थक बनाता है। यूँ तो मनुश्य अपने जीवन में अपने अनुभवों द्वारा ज्ञान प्राप्त करता है और जीवन में आदर्ष जीवन–मूल्यों की स्थापना करता है; किन्तु साहित्य, मनुश्य के जीवन में सुलभ आदर्ष मूल्यों को स्थापित करने में अधिक कारगर सिद्ध हुआ है।

भारतीय साहित्य में प्राचीन काल से ही जीवन – मूल्यों को महत्व दिया गया है। भारतीय विद्वानों ने मूल्यों की विवेचना मुख्यतः धर्म के संदर्भ में की है। जिन गुणों को धर्मानुकुल पाया गया है; उन्हें ही जीवन मूल्यों के अनुकूल बताया गया है। मनुश्य के अनुसार धर्म के दष लक्षण हैः

धृति क्षमा दमो स्तेयं षौचमिन्द्रिय निग्रहः।
धीविद्यासत्यमक्रोधो दषंक धर्म लक्षणम्।।

धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय, षौच, इन्द्रिय–निग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य और अक्रोध ये धर्म के दष लक्षण हैं और यही मानवीय गुण मनुश्य गुण को श्रेश्ठ मनुश्य बनाने में पूरक हैं। यही मावनीय गुण मनुश्य के नैतिक जीवन–मूल्य हैं। भर्मृहरि ने भी अपने 'नीतिषतक' में मानवीय गुणों को ही नैतिक मूल्य स्वीकार किया है। उनके अनुसार जिन व्यक्तियों में विद्या, तप, दान, षील, गुण, धर्म आदि नहीं होते वे धरती पर बोझ होते हैं, तथा पषु की तरह आचरण करते हैं।

''येशां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं षील गुणों न धर्मः
ते मत्यलोके भुवि भारभूताः मनुश्य रूपेण मृगाष्चरन्ति।।''

भारतीय साहित्य में उस ज्ञान और उस जीवन को महत्व नहीं दिया गया, जिससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, की प्राप्ति नहीं होती। इसलिए पुरूशार्थ स्वयं जीवन – मूल्यों के रूप में लक्षित होते है। मोक्ष को जीवन का चरम पुरूशार्थ बताया गया है। अर्थ और काम उस लक्ष्य तक पहुँचने के साधन है। पुरूशार्थ से जो जीवन–मूल्य उभरते है उन्हें दो वर्गो में बांटा जा सकता है–एक साधनात्मक और दूसरा साध्य। धर्म, अर्थ और काम साधनात्मक जीवन–मूल्य है जिनसे मोक्ष नामक पुरूशार्थ तक पहुँचा जाता है। मोक्ष ही जीवन का साध्य है और उसी की प्राप्ति के लिए मनुश्य कर्म करने को विवष होते है। पुरूशार्थ में प्राप्त चारों जीवन–मूल्य, मनुश्य के लिए आवष्यक जीवन–मूल्य है। इनके अभाव में मनुश्य अपने जीवन को सार्थ नहीं बना सकता।

समय के अनुसार मूल्य – चिंतन में परिवर्तन होता रहा है। अब मूल्यों के चिंतन ने धर्म और नैतिक संदर्भ से आगे बढ़कर मनुश्य के स्वाभाविक विकास और स्वतंत्रता के संदर्भ को वरण कर लिया है। अब उसका क्षेत्र विस्तृत हो गया है। डॉ0 देवराज के अनुसार–

''मनुश्य वस्तु वह है, जिसकी मनुश्य कामना करता है।''

सामाजिक आदर्षो, वैयक्तिक उदान्त गुणों आदि को साहित्य में विषिश्ट उदे्ष्यों से संकलित करना ही मूल्य है। प्रत्येक देष–स्थान में सबकी संस्कृति, सबका जीवन जीने का अलग–अलग तरीका होता है। ये जीवन जीने का अलग तरीका, ढ़ंग और संस्कृति ही उस देष–स्थान या समाज के जीवन मूल्य कहलाते हैं।

डॉ0 जगदीष गुप्त की अवधारणा है कि बिना मानवीय संवेदनाओं को केन्द्र में रखे मूल्य की कल्पना नहीं की जा सकती। मूल्य और मानव जीवन के दो अभिन्न पहलू हैं। मूल्य का दैनिक जीवन में अटूट संबंध है। प्रतिदिन मानव नए परिवेषों का अवलोकन एवं अनुभव करना चाहता है। इनके मूल में मूल्य की ही प्रबल सत्ता है। मूल्य के अभाव में मनुश्य एक पल भी नहीं रह सकता। मूल्य का संबंध निर्णय से है और उसकी जरूरत मनुश्य को पग–पग पर पड़ती है। निर्णय छोटा या बड़ा, जान–बुझकर किया जाये या अनजाने में वह किसी मूल्य का आधार लेकर ही किया जाता है इस सम्बंध में अज्ञेय का कहना है कि–

''हम मानते हैं कि सब प्रतिमानों का, सब मूल्यों का स्रोत मानव का विवेक है, वही उसे सदासद का ज्ञान देता है– फिर उस सत् और असत् का क्षेत्र चाहे जो हो''[3]

पाष्चात्य विद्वान अर्हेस्ट बरकर ने लिखा कि–'' मूल्य वह गुण है, जिसकी वजह से किसी की अपनी एक विषिश्ट महत्ता या उपयोगिता निर्धारित होती है और जिसे अधिक व्यक्ति लम्बे समय तक एक मत से स्वीकार करते है।4

आधुनिक युग के विचारकों ने मूल्य का जीवन के साथ सम्बंध जोड़कर नये जीवन दर्षन का निर्माण किया है। रामधारी सिंह दिनकर के अनुसार –''मूल्य वे मान्यतांए है जिन्हें मार्गदर्षक ज्योति मानकर सभ्यता चलती रही है जिसकी उपेक्षा करने वालो को परम्परा, अनैतिक, उच्छृंखल या बागी कहती है, किन्तु कभी–कभी ऐसा भी होता है कि पुराने मूल्यों को मिटाकर उनकी जगह नये मूल्यों की प्रतिश्ठा करने वाले व्यक्ति भगवान बन जाते हैं।''[8]

प्रेमचन्द के अनुसार–मनुश्य जिस समाज में रहता है, उसमें मिलकर रहता है, जिन भावनाओं से वह अपने मेल के क्षेत्र को बढ़ा सकता है, वही सत्य है, जो वस्तुएं भवनाओं के प्रवाह में बाधक होती है, वे सार्थक अस्वाभविक हैं परन्तु यदि स्वार्थ, अहंकार और ईर्श्याओं की ये बाधाएं न होती तो हमारी आत्मा को षक्ति कहां से मिलती, जिससे हमारा विकास होता। षक्ति तो संघर्श में है। हमारा मन इन बाधाओं को परास्त करके स्वाभाविक कर्म को प्राप्त करने की चेश्टा करता है। यही चेश्टा सामाजिक जीवन मूल्यों का निर्माण कर उसे समाजिक प्राणी बनाती है। इसी से उसकी पहचान बनती है।

जो व्यक्ति अपनी पहचान बनाने के लिए प्रयास नहीं करता वह समाज में पिछड़ जाते है और पिछड़े हुए व्यक्ति का जीवन उदे्ष्यहीन व नीरस हो जाता है। मनुश्य को अपनी पहचान बनाने के लिए समाज के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना पड़ता है

और इस प्रकार समाज के साथ–साथचलने से समाज में आने वाले परिवर्तन के साथ–साथ मनुश्य के जीवन–मूल्यों में भी परिवर्तन आता चला जाता है और पुराने की जगह नये जीवन मूल्य स्थापित होते रहते हैं। क्योकि परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है, इसलिए परिर्वतन एक स्वाभविक प्रक्रिया है।

मनुश्य गतिषील जीवन जीता है। मानव मूल्यों का उसके जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है। मानव–मूल्यों के माध्यम से मनुश्य कस स्वभाव उभरकर सामने आता है। मूल्य तो प्रत्येक वस्तु,स्थिति एवं चिंतन का होसकता है, लेकिन महत्त्वपूर्ण मूल्य वह मूल्य हो सकते हैं जो मानव के जीवन को गतिषील बनाये रखने में समक्ष होते हैं।

मनुश्य का आन्तरिक और बाह्य विकास मानव–मूल्यों के द्वारा ही संभव है। मानव–मूल्य, मानवता पर बल देता है। मानवता के द्वारा ही व्यक्ति का भला हो सकता है और उसी से व्यक्ति को समाज में सम्मान प्राप्त होता है क्योंकि इन सबका आचरण से है। समाज में अच्छे आचरण वाले व्यक्ति को सम्मान की दृश्टि से देखा जाता है। मनुश्य का अच्छा आचरण समाज में एक अच्छे नागरिक की पहचान दिलाता है। परन्तु इस सब के पीछे एक अच्छे साहित्य की बड़ी भूमिका है।

प्रारम्भ से ही साहित्य मानव–जाति का कल्याण करता आया है। प्रत्येक बदलते युग में साहित्य ने विगत युग के ह्रासषील विघटनकारी रूप से उभर कर समसामयिक चिंतन की अनुरूपता में कुछ नया अधिगत करने का प्रयास किया है। साहित्य की चेतना में यह एक युग से दुसरे युग का परिवर्तन मूल्यगत परिवर्तन कहलाता है। इस प्रकार साहित्य की दृश्टि से मूल्य, मानव–जीवन के भौतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्तरों की समग्र समन्विति के लिए प्रयुक्त एक षब्द हैं। दूसरों षब्दों में इस प्रकार से गुजर कर मानव की आत्मोपलब्धि स्वयं की ही उपलब्धि का दुसरा नाम है। जीवन की गति को मूल्यों द्वारा ही नापा जा सकता है। वह प्रत्येक धारणा जो जीवन को आगे बढ़ाती है और सुरक्षित करती है, मूल्य कहलाती है।

मनुश्य का स्वभाव है सृजन कना। वह बाह्य वास्तविकता और आंतरिक जीवन की सापेक्षता में अपना मूल्यवान निर्माण करता चलता हैं। इस प्रकार मूल्य का जीवन से अटूट संबंध है। अतः मूल्य मानव–गौरव के प्रतिश्ठापक सर्वमान्य मंगलकारी सिद्धान्त हैं।

साहित्य के सही मूल्यों के लिए संपूर्ण युग–बोध आवष्यक होता है और युग बोध के तात्त्विक परिचय का साधन युगीन साहित्य ही होता है। इस प्रकार जीवन मूल्यों और साहित्य का सापेक्ष संबंध होता है। उदाहरण स्वरूप पूर्वमध्यकालीन युग के सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक आदर्षो का परिचय अकेले तुलसीदास के 'रामचरितमानस' से ही हो सकता है। यदि तुलसीदास ने युग की आवष्यकताओं को समझकर अपने 'रामचरितमानस' में मर्यादा पुरूशोत्त्म राम का वैसा आर्दष रूप चित्रित किया तो उन्हीं राम का भिन्न रूप में चित्रण बाद में युग परिस्थतियों व युगीन आवष्यकताओं के अनुसार आचार्य केषव ने 'रामचंद्रिका' में प्रस्तुत किया।

आधुनिक युग के परिप्रेक्ष्य में मैथिलीषरण गुप्त कृत 'साकेत' के राम और इसी कड़ी में आगे, नरेष मेहता के ' संषय की एक रात' और महेन्द्र कार्तिकेय के 'प्रभु और परात्पर' के राम परिस्थितियों के परिवर्तन स्वरूप अलग–अलग रूप देखे जा सकते है। साहित्य के मूल्य जीवन–मूल्यों से ही निर्धारित होते हैं। साहित्यकार केवल उन्हें नई भावभूमि प्रदान करके ग्राह्य और सर्वजन संवेद्य बना देता है, जिससे उसकी कृति, मनुश्य की चेतना और आचरण को नियंत्रित करने वाली सहस्त्र प्रवत्तियों को अधिक संस्कृत और अपने सामाजिक परिवेष के प्रति अधिक जागरूक बनाती जाती है– युग युगांतर तक।''[6]

साहित्यकार को यह मूल्यगत उपलब्धि दोहरे स्तर पर होती है। पहले स्तर पर मूल्यों को समझने हेतू समस्त युगीनबोध की प्रक्रिया में से गुजरता है और, दूसरे स्तर पर उपलब्ध मूल्यों को साहित्य में नियोजित करता हैं। वह मूल्य दृश्टा और मूल्य सृश्टा दोनों रूपों मे जीवन का साक्षात्कार करता है। उसकी दृश्टि में जीवन की महत्ता सिद्धांत की अपेक्षा व्यवहारिक अधिक रहती है। यही कारण है कि साहित्य में प्रयुक्तहोकर जीवन–मूल्य केवल सिद्धांत नहीं रह जाते। साहित्य में जीवन–मूल्य की अभिव्यक्ति उसी तरह सीधी तर्कपूर्ण और वक्तव्यप्रधान नहीं होती जैसी ज्ञान–विज्ञान और नीति, धर्म के क्षेत्र में होती है। समस्त प्रतीकात्मक होता है, जिसमें जीवन–मूल्य उपचेतन मन में से बदलकर चेतन–लोक में आ जाते हैं।[7]

वास्तव में 'साहित्य के मूल्य उस मूल्यवत्ता के प्रतीक होते हैं जिन्हें कोई युग सहर्श स्वीकार करता है। साहित्य के माध्यम से व्यक्त होने वाले मूल्य, जीवन के मूल्यों से संबंधित होते हैं। साहित्य समाज से प्रेरणा लेता है और मानव साहित्य से। मानव जीवन के लिए जिन मूल्यों की उपयोगिता है वे ही मूल्य साहित्य के माध्यम से समात के सामने रखे जाते हैं। यह कार्य सरल नहीं है। इस कार्य को साहित्यक मूल्य के द्वारा ही क्रियान्वित किया जा सकता है।

साहित्य का विशय मानव और उसका जीवन है और मानव–जीवन का लक्षण है गतिषीलता और परिवर्तनषीलता। ऐतिहासिक परिस्थितियों की छंदात्मक अन्विति में जीवन में नए परिवर्तन होते हैं जो इतिहास की बदलती हुई स्थिति में जीवन की श्रेश्ठता का मानदण्ड बन जाते हैं। हर ऐतिहासिक परिवर्तन के अवसर पर नए जीवन–मूल्यों के निर्धारण की आवष्यकता होती है। यह अवष्यकता साहित्य के नए मूल्यों के निर्धारण की आवष्यकता को प्रतिपादित करती है। इसी नियम के कारण भिन्न–भिन्न साहित्यक मूल्यों की स्थापना हुई है।[8]

मूल्य हर युग के साहित्य में विद्यमान होते हैं, किन्तु उसकी जैसी सहज अभिव्यक्ति आधुनिक काल में हुई है वैसी षायद इसके पूर्व में नहीं थी। पहले साहित्य और नीतिषास्त्र के बीच बटंवारा था। मूल्यों की रचना साहित्य में होती थी और उनकी व्यवस्था नीतिषास्त्र में। आधुनिक साहित्य मूल्यों की रचना तो करता ही है, उनकी व्याख्या में भी उसकी रूचि विकसित हुई है। एक प्रकार से यह एक अतिरिक्त दायित्व उसने अपने ऊपर ले लिया है। यदि समसामयिक साहित्य का अर्थ हम नई कविता से लेते हैं तो कहा जा सकता है कि मानवीय स्वतंत्र्य का अहसास इस युग में तीव्रतर हुआ है। स्वातंत्र्य का मुल्य इन रचनाकारों ने दायित्व के साथ जोड़ा है। मानवीय स्वातंत्र्य और दायित्व अविच्छिन्न मूल्य के रूप में माने गए हैं। दायित्व का अनुभव वही करेगा जो पहले स्वतंत्र होगा और इन दोनों की अंतन प्रक्रिया में रचातमकता की संभावना है, जो मानवीय वैषिश्टय् काप्रमुख आधार है और फिर इस रचनात्मकता में से आस्था विकसित होती है। साहित्य आस्था में बनता है और फिर स्वयं आस्थाओं को जन्म देता है। इस रूप में स्वातंत्र्य, दायित्व, रचना और आस्था साहित्य के विषिश्ट मूल्य कहे जा सकते हैं, जो एक दूसरे से अनिवार्य रूप में जुड़े हुए हैं।'

साहित्य के क्षेत्र में मूल्यों की चर्चा जितनी बीसवीं षताब्दी में हुई है, उतना पहले कभी नहीं। वे मान्यताएँ, वे सिद्धान्त, वे गुण जो अपनी अंतर्निहित अर्हता या क्षमता के कारण मनुश्य को अच्छाबनाती हैं, मूल्य कहलाती हैं। साधरण तौर पर मूल्य व्यक्ति के गुणो को ही नहीं कहना चाहिए। जब तक व्यक्ति के गुणों का प्रभाव समाज पर नहीं होता और सामाजिक संबंधो में व्यक्ति के आचरण के वे मूल्य प्रस्फुटित नहीं होते तब तक उनको ठीक–ठीक मूल्य मानना मुष्किल होगा। साहित्यकार पर तत्कालीन जीवन और युगीन आचार–विचार, रहन–सहन और भावना, आदर्ष तथा सामाजिक परिवेष और मान्यताओं कास प्रभाव पड़ता है। इन्हीं का संक्षिप्त चित्रण उनकी

रचनाओं में होताहै। छायावादी कवियों के साहित्यक मूल्य यदि आगे चलकर मार्क्स, गाँधी अरविंद आदि के प्रभावस्वरूप बदल गए तो यह एक स्वभाविक प्रक्रिया है। आचार्य रामचन्द्रषुक्ल ने भी कहा है कि–तत्कालीन साहित्य वहाँ की जनता चित्तवृत्तियों का संचित प्रतिबिम्ब होता है।

साहित्य समाज से ही प्रेरणा प्राप्त करता है। जो गुण मनुश्य को मनुश्यत्व प्रदान करते हैं उन्हीं गुणों को साहित्यकार अपने में सृजित करता है। एक अच्छे साहित्यकार का दायित्व है कि वह ऐसा साहित्य रचे जिससे जनता को प्रेरणा मिले। मनुश्य को साहित्य के द्वारा अपने जीवन में अच्छा आचरण आत्मसात् करने का दायित्व साहित्यकार पर निर्भर होता है। एक अच्छा साहित्यकार अपने साहित्य में उचित जीवन–मूल्यों को सृजित कर अपने दायित्व का उचित निर्वाह करता है।

इस प्रकार साहित्य में निहित जीवन–मूल्यों को श्रेश्ठ मनुश्य बनाने में सहायक सिद्ध हुए हैं। यह अलग बात है कि प्रत्येक मनुश्य की समझने की सामर्थ्य के अनुसार वह अपने जीवन में साहित्य में निहित जीवन–मूल्यों को किस रूप में गृहण करता है।

संदर्भ

1. नीतिषतकम्ः भर्तृहरि, ष्लोक 13।
2. संस्कृति का दार्षनिक विवेचनः डॉ0 देवराज, पृ0 160।
3. हिंदी साहित्यः एक आधुनिक परिदृष्यः सच्चिदानंद हीनंद वात्स्यायन अज्ञेय, पृ0 10।
4. जैम अंसनम व िसपमि रू म्तीमेज ठमतामतए चहण 13ण।
5. साहित्य मुखीः रामधारी सिंह दिनकर, पृ0 56।
6. अलोचना के मानः षिवदान सिंह चौहान, पृ0 6।
7. व्यक्ति और दृश्टाः षम्भुनाथ सिंह, पृ0 82।
8. आधुनिक हिंदी साहित्यः डॉ0 रामगोपाल सिंह चौहान, पृ0 347।
9. मूल्यः साहित्य, संस्कृति और समाजः रत्ना लाहिड़ी, पृ0 2।